हिरोशिमा का दर्द

तोशि मारुकि

अनुवाद
डॉ. तोमोको किकुचि

इस पुस्तक के मूल जापानी संस्करण का प्रकाशन
Komine Shoten तोक्यो, जापान ने किया है।

ISBN 978-81-237-6327-9

पहला संस्करण : 2011 *(शक 1933)*
पहली आवृत्ति : 2012 *(शक* 1934)

© जापान फॉरेन राइट सेंटर, 2011
हिंदी अनुवाद © नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 2011

Hiroshima Ka Dard *(Hindi)*

₹ 65.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

नेहरू बाल पुस्तकालय

हिरोशिमा का दर्द

तोशि मारुकि

अनुवाद
डॉ. तोमोको किकुचि

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

जापान के एक शहर,
हिरोशिमा की वह सुबह,
अभी भी मुझे याद है।
आसमान बिल्कुल साफ था।
गर्मी की चिलचिलाती धूप
जैसे चुभ-सी रही थी।
हिरोशिमा की सातों नदियां
मंद-मंद धुन में बही जा रही थीं।
ट्रिन-ट्रिन करती शहर की ट्राम गाड़ी भी
रोज की तरह
अपनी धीमी चाल से चली जा रही थी।

जापान के अनेकानेक शहर
तोक्यो, ओसाका, नागोया जैसे बड़े शहर भी
एक के बाद एक बमबारी के शिकार हुए
और जल कर राख हो गए।
इस हवाई बमबारी के प्रकोप से
अछूता रह गया था, सिर्फ हिरोशिमा शहर।
आखिर क्यों? जैसे प्रश्न उठने लगे।
कब तक बचेंगे? जैसी आशंकाएं उभरने लगीं।
आपदा से निबटने के लिए सभी तैयारी करने लगे।
ऊंची इमारतों को तोड़ कर सड़कें चौड़ी की गईं,
ताकि आग न फैले।
ढेर सारा पानी जमा कर रखा गया।
बमबारी से बचने-छुपने के लिए स्थान बनाए गए।
हर वक्त दवाइयों के थैले
और मोटे कपड़े की टोपी से
सभी लैस रहा करते थे।

इन्हीं बेबस लोगों में एक नन्ही-सी लड़की भी थी।
सात साल की—नाम था 'मीचन'।
वह सुबह जब सब कुछ रोजमर्रा की तरह था।
मीचन भी नाश्ता कर रही थी।
अपने माता-पिता के साथ।
नाश्ते में पका चावल गुलाब के रंग का था।
क्योंकि वह शकरकंद के साथ पकाया गया था।
कल ही तो गांव से किसी ने भेजा था यह शकरकंद।
'बहुत ही स्वादिष्ट है! है ना?'
बड़े चाव से मीचन उसे खा रही थी।
जोर की भूख जो लगी थी उसे।
पापा को भी चावल बहुत स्वादिष्ट लग रहे थे।

यही वह क्षण था जब अचानक
एक आंखों को चौंधा देने वाली भयावह चमक
हमें चीर कर निकल गई।
नारंगी रंग का था! नहीं, नहीं, हल्के नीले रंग का था।
ऐसा लगा जैसे सौ-दो सौ बिजलियां
एक साथ हम पर गिर पड़ी हों।
दरअसल वह एक परमाणु बम था,
जिसे मानव इतिहास में
पहली बार किसी पर गिराया गया था।
बी-29 नामक हवाई जहाज से,
जिसे अमेरिका ने भेजा था।
उस हवाई जहाज का नाम था–'एनोला गेइ'।
और उस परमाणु बम का नाम था–'लिटल बोइ'
इतना प्यारा-सा नाम रखा गया था उस परमाणु बम का।
यह घटना है, छह अगस्त, 1945, सुबह आठ बजकर पंद्रह मिनट की।

मीचन भी बेहोश हो गई।
जब आंख खुली, तो चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा।
सुन्न, सन्नाटा छाया था चारों ओर।
आखिर हुआ क्या? आखिर चल क्या रहा है?
शरीर जैसे जकड़-सा गया था।
पट-पट कर जलने की आवाज आ रही थी।
अंधेरे के उस पार, लाल लपट उठने भी लगी।
अरे! ये तो आग लगी है।
'मीचन!'
मां की पुकार कानों को भेद रही थी।
लेकिन मीचन पूरी तरह भारी-भरकम लट्ठे के नीचे दब-सी गई थी।
लट्ठे के भार को पूरी शक्ति से हटाते हुए
किसी प्रकार रेंगते हुए वह बाहर निकली।
उसे देखते ही मां ने मीचन को अपनी बांहों में भींच लिया।
मां के बाल पूरी तरह बिखरे हुए थे।
"तुम जल्दी आओ...!"
"मीचन के पापा! कहां हैं आप?"
पापा तो आग की लपटों में फंसे हुए थे।

पापा को बचाना मुश्किल था शायद।
'असहाय!'
दोनों ने आग को हाथ जोड़ा।
यही वह क्षण था जब
'भां!' आवाज के साथ
अचानक आग की लपटों के बीच
पापा की छवि उभरी,
और उसी क्षण मां उन लपटों में कूद कर
पापा को बाहर खींच लाईं।
''पापा के बदन पर घाव हैं, गड्ढे जैसा दिखाई दे रहा है।''
मां ने अपने कपड़े में लगी चौड़ी बेल्ट की पट्टी खोली
और उससे घाव पर पट्टी बांधी।
पता नहीं कैसे, कहां से
मां में इतनी अद्‌भुत शक्ति आ गई।
पापा को अपनी पीठ पर लाद कर
नन्ही मीचन का हाथ पकड़
दौड़ती हुई निकल पड़ीं।

"नदी! नदी!"
मां चीख रही थीं।
"पानी! पानी!"
मीचन भी बिलख रही थी।
तीनों किसी प्रकार लुढ़कते हुए
नदी के तटबंध को पार करते हुए
छप-छप करते हुए नदी के जलाशय में प्रवेश कर गए।
लेकिन मीचन का हाथ छूट गया,
मां भी विचलित हो गईं।
"जल्दी-जल्दी, ठीक से हाथ पकड़ो।"
नदी में बहुत सारे लोग थे, जो आग से बचकर यहां पहुंचे थे।
कुछ बच्चों के कपड़े जल कर जगह-जगह से फट गए थे।
पलकें, ओंठ जैसे कोमल अंग सूज कर फूल-से गए थे।
बच्चे, जिनकी आंखें भी नहीं खुल रही थीं,
धीमे-धीमे बुदबुदा रहे थे,
"पानी, पानी...पानी दो..."
त्वचा झुलस गई थी।
जगह-जगह से छिलके की तरह लटक रही थी।
बहुत सारे लोग थे।
कुछ भूत-पिशाच की तरह
इधर-उधर घूम रहे थे।

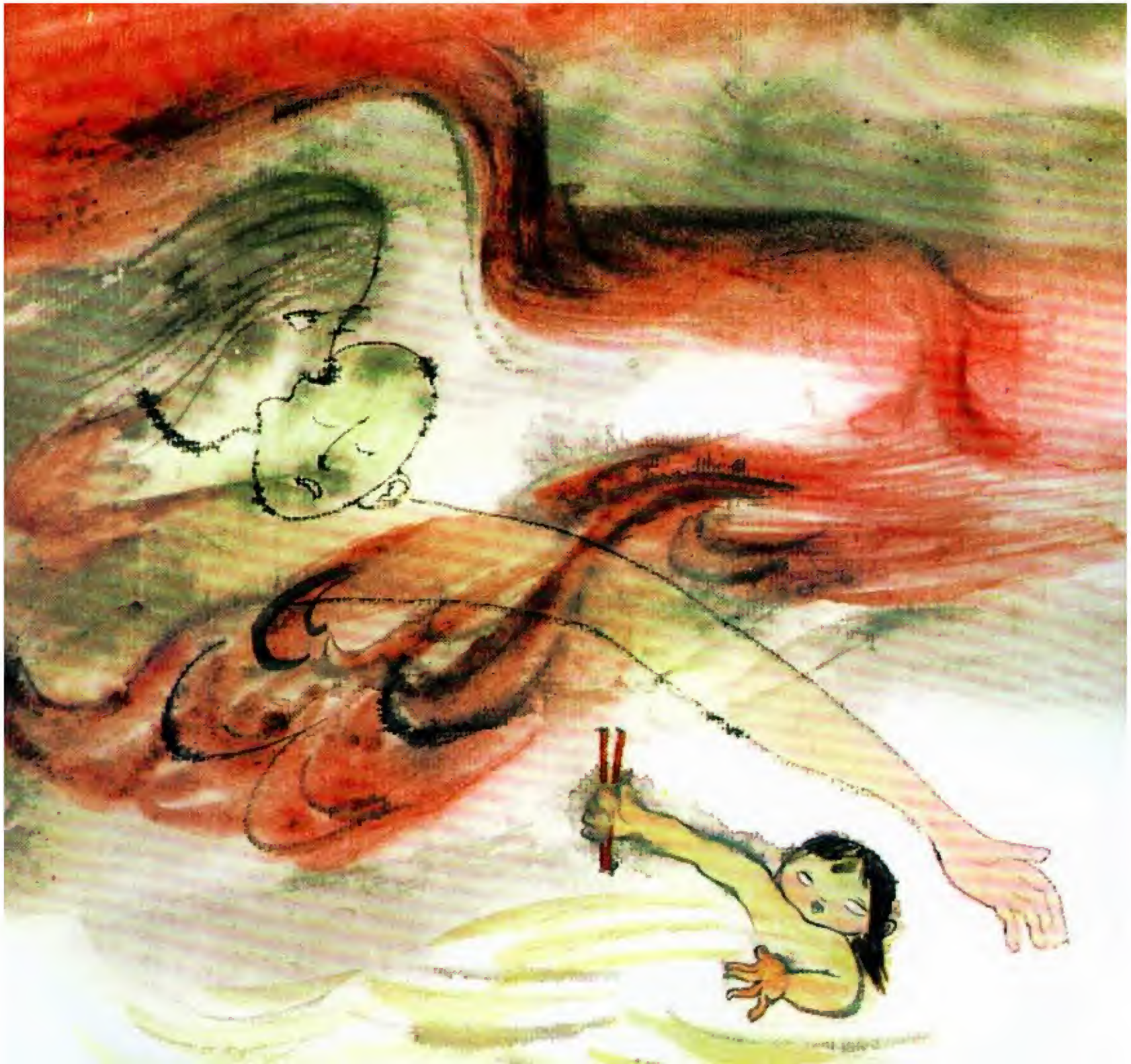

कुछ ने दम तोड़ दिया था
और मुंह के बल गिरे पड़े थे।
उनके ऊपर और भी लोग गिरते जा रहे थे।
एक छोटा-सा पहाड़ बन गया था उन दम टूटते लोगों का।
इतना भयानक दृश्य शायद नरक का भी न हो!

तीनों ने एकजुट होकर पार कर ली
एक और नदी।
फिर, जैसे ही मां ने पापा को कंधे से उतारा
वह खुद भी जड़-सी बैठ गई।

मीचन के पैरों के पास
कुछ नन्ही चिड़िया जैसी चीज उछलती हुई जा रही थी।
अरे! ये तो अबाबीलें हैं!
पंख जल चुके हैं
उड़ान भरने में बेबस!!
नदी के बहाव के ऊपरी हिस्से से
धीरे-धीरे बहे चले आ रहे थे
इंसान भी, बिल्ली भी।

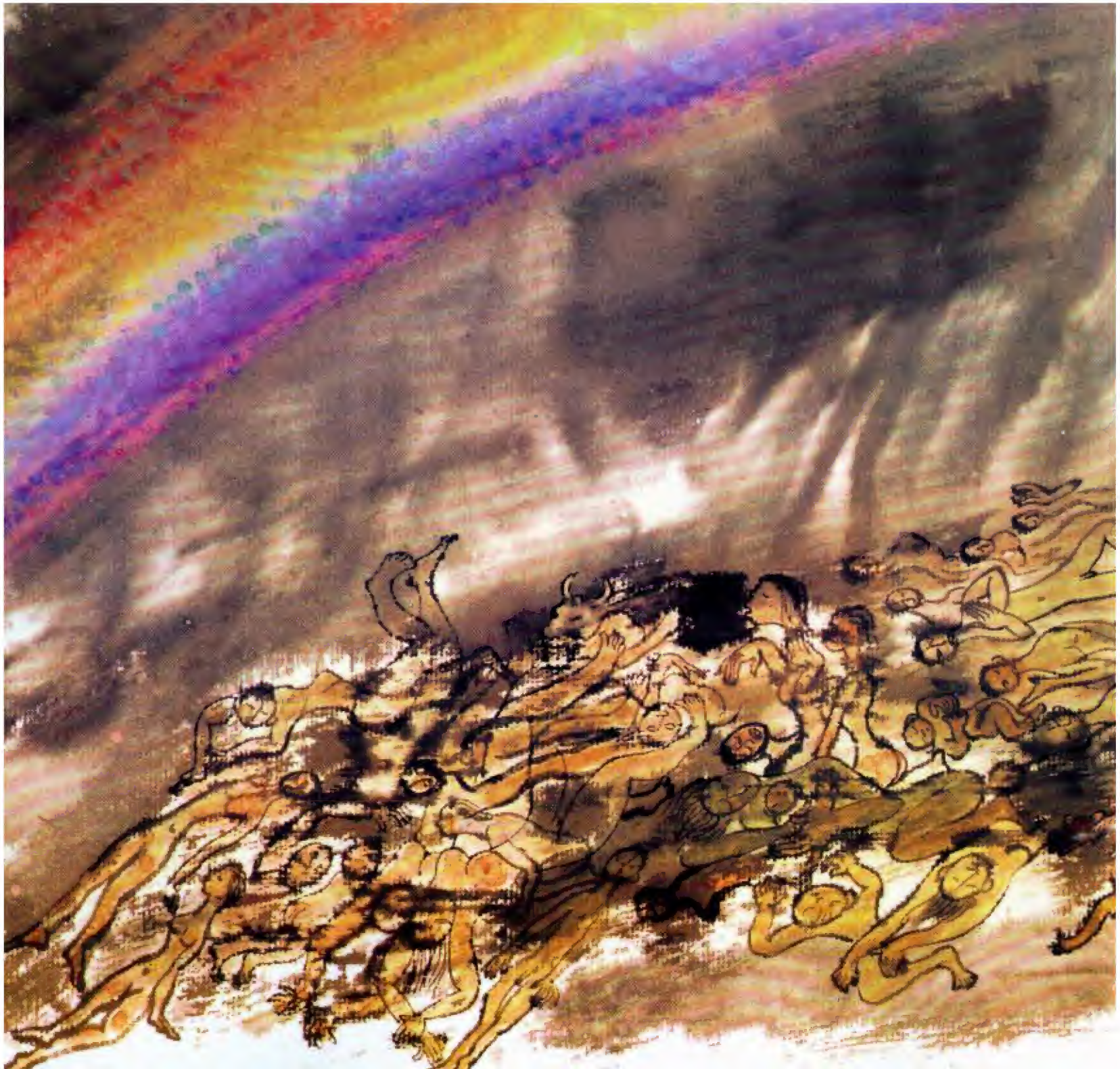

संयोग से
जब मीचन ने पीछे मुड़ कर देखा,
एक औरत अपने बच्चे को
सीने से लगाए
रोए जा रही थी।
उसने मीचन को बताया
कि कैसे वह भागती-भागती
बच्चे को बचा कर यहां तक लाई थी।
पर जैसे ही
उसे अपना दूध पिलाना चाहा,
उसे मृत पाया।
वह औरत अपने बच्चे को सीने से लगाए
छप-छप कर नदी की ओर बढ़ने लगी
लहरों को चीरती हुई
गहराई की ओर बढ़ती हुई
अदृश्य होती चली गई।

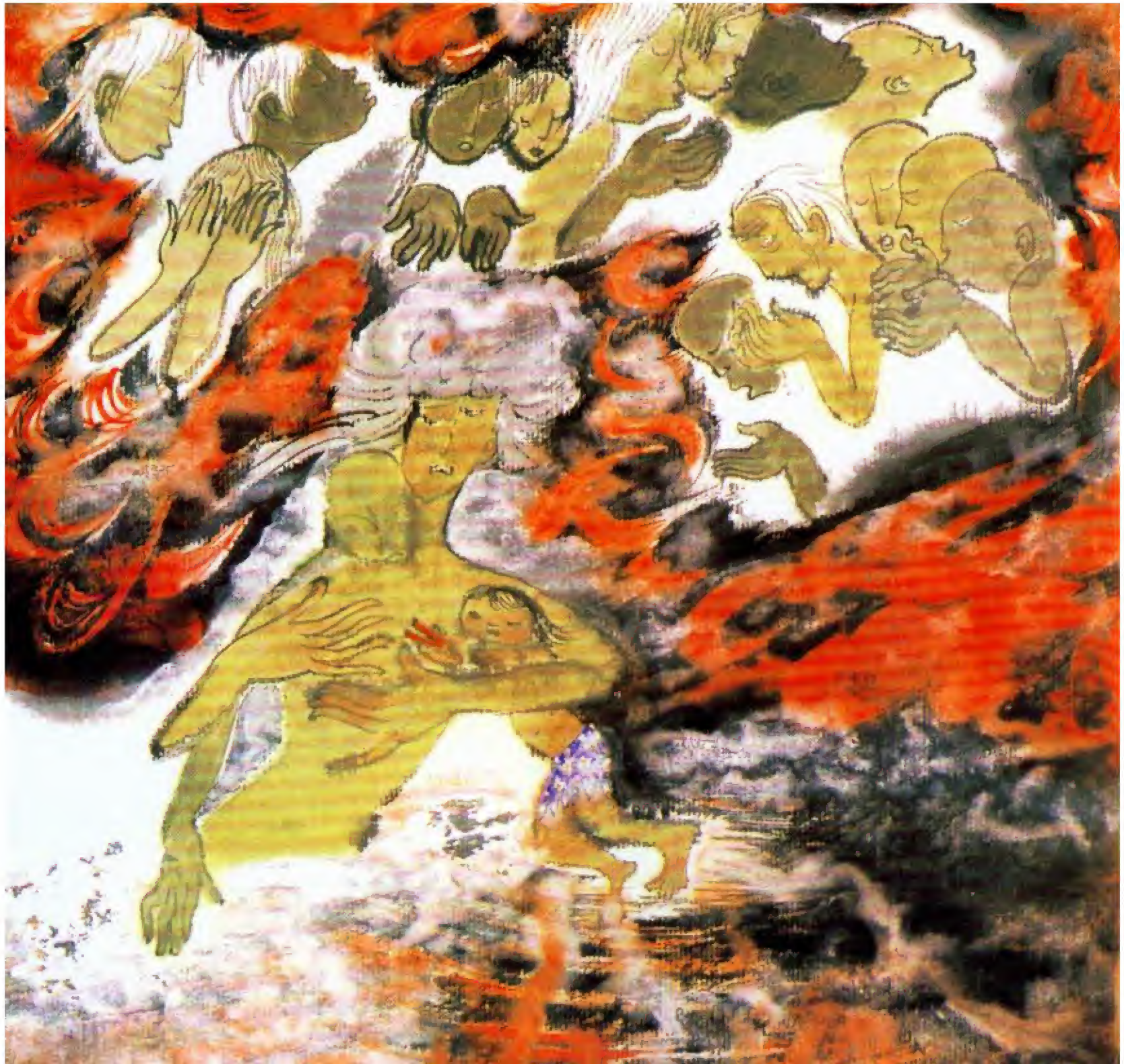

आकाश में अंधेरा तिर आया और बादल
गरजने लगे।
बारिश भी शुरू हो गई।
काले रंग की बारिश थी यह, बिल्कुल तेल
की तरह।
भीषण गर्मी का मौसम था यह,
फिर भी बहुत ठंड लगने लगी।
आखिरकार अंधेरे आकाश में
सतरंगा इंद्रधनुष उभरने लगा।
मृतकों के ऊपर भी
घायलों के ऊपर भी
बराबर दमकने लगा।

मां ने एक बार फिर से
पापा को पीठ पर उठाया।
और फिर तीनों चुपचाप दौड़ने लगे।
भयानक आग की लपटें उनका पीछा कर
रही थीं।
दुर्गम पथ! चल पाना भी मुश्किल!!
टूटे खपरैल बिछे हुए थे,
बिजली के खंभे गिरे पड़े थे,
टूटी बिजली की तारें पड़ी थीं।

फिर भी वे दौड़ रहे थे।
धू-धू कर जलते हुए
घरों के बीच से बचते हुए
फिर से एक नदी पर आ पहुंचे।
नदी में घुसते ही, मीचन को नींद आने लगी,
नींद से बोझिल मीचन ने एक घूंट पी भी लिया
नदी के पानी का।
मां ने हाथ बढ़ा कर तुरंत उसे बचा लिया।
तीनों किसी प्रकार से सरकते हुए समुद्री तट तक जा पहुंचे,
जिसका नाम था–मियाजिमागुचि तट।
सामने मियाजिमा टापू बैगनी रंग में
धुंधला-सा दिखाई दे रहा था।
मां सोच रही थी कि नाव में बैठ कर
तट पार मियाजिमा टापू पर चले जाएं।
टापू पर चीड़ और मेपल के बहुत सारे वृक्ष थे।
और वहां के तट का पानी भी
स्वच्छ और साफ होता था।
शायद वहां तक आग भी हमारा पीछा न कर पाए।
यही सोच रही थी मीचन जब,
अचानक उसकी आंखें बंद हो गईं।
और फिर पापा की भी आंखें बंद हो गईं।
और फिर मां की भी।

दिन ढल गया, रात हो गई।
फिर रात भी बीत गई, और सवेरा हो गया।
फिर रात आई, फिर से सूरज निकला।
फिर रात आई, सवेरा भी हुआ।

"आज क्या तारीख है, भैया?"
मां ने राह चलते किसी से पूछा।
वह गिर पड़े लोगों को एक-एक कर
उठा कर जांच रहा था,
"नौ तारीख है।" उसने उत्तर दिया।
मां ने उंगलियों पर जोड़ कर देखा और बोलीं,
"चार दिन बीत गए, उस घटना को।"

ऐसे हाल में मीचन सिसकियां भरने लगी।
पास पड़ी दादी मां
जो मृत-सी दिख रही थीं,
वह अचानक उठ गईं
और अपनी पोटली से चावल का लड्डू निकाला
फिर मीचन की ओर बढ़ा दिया।
दरअसल वह आटे का लड्डू था।
जैसे ही मीचन ने उसे हाथ में लिया,
दादी मां जमीन पर गिर पड़ीं
और शिथिल पड़ गईं।

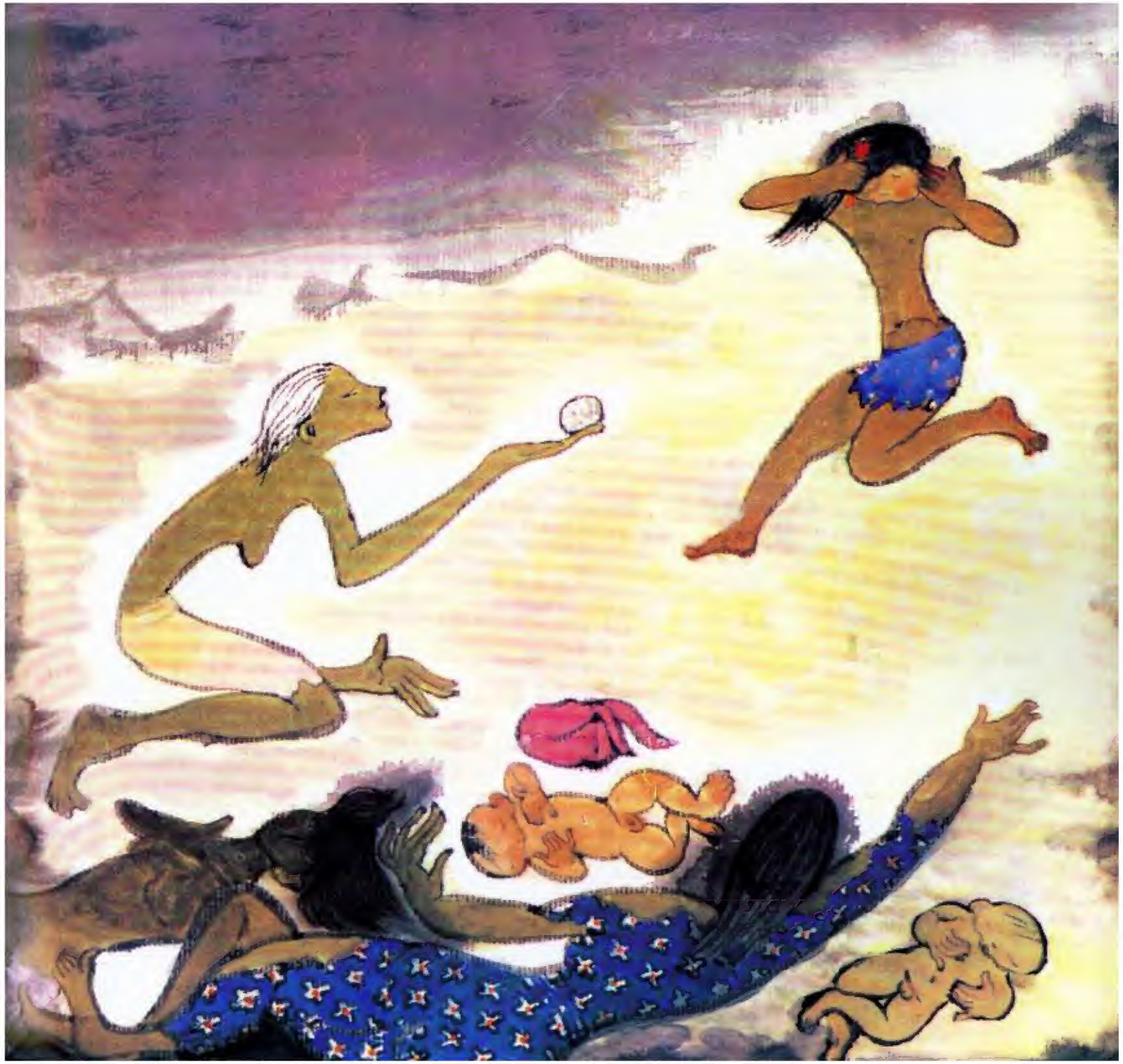

मां यह देख कर हैरान थीं कि इस हाल में भी
इस बच्ची ने चौप-स्टिक्स पकड़ रखा है।
"छोड़ो इसे! छोड़ो तो इस चौप-स्टिक्स को!!"
फिर भी उसके हाथ से चौप-स्टिक्स अलग नहीं हुआ।
मां ने एक-एक कर उसकी जकड़ी हुई
उंगलियों को ढीला किया।
चार दिन बीत गए थे
उस भयावह घटना को,
तब से उसने चौप-स्टिक्स पकड़े रखा था।
आज चौप-स्टिक्स अपने आप ही
जमीन पर गिर पड़ा।
पास के गांव से
अग्निशामक के दफ्तर से कुछ लोग आए
लोगों की सहायता करने के लिए।
सेना के लोग
मृत व्यक्तियों को उठा कर एक ओर रख रहे थे।
मृत शरीर के सड़न से उत्पन्न दुर्गंध
उसके ऊपर जलते हुए शरीर की बदबू
बिल्कुल सांस लेना भी दूभर था।
वहां एक विद्यालय किसी तरह जलने से बच गया था,
वह अस्पताल में परिवर्तित हो गया।

लेकिन न तो वहां चारपाई थी, न ही चादर। जमीन पर सोने के सिवा
और कोई चारा न था। डॉक्टर कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं।
दवाइयां भी नहीं हैं। पट्टी भी नहीं।
मां ने मीचन की मदद से पापा को कंधे
पर उठा कर अस्पताल पहुंचा दिया।
उसी स्कूल वाले अस्पताल में।
"मीचन का घर पता नहीं किस हाल में
होगा? चलो, चल कर देखते हैं।"
मीचन के साथ मां उस जगह को देखने गईं,
जहां पहले उनका घर हुआ करता था।
"अरे! यह तो मीचन की कटोरी है।
टूट गई बेचारी! मुड़ भी गई है।"
पड़ोस की सहेली, नाम जिसका सच्चन था,
वह पता नहीं किस हाल में होगी?
और मेरी सहेली जिसका नाम चीचन था,
पता नहीं कहां चली गई?
मीचन की एक भी सहेली अब नजर नहीं
आ रही। हिरोशिमा का पूरा शहर एक
मैदान-सा नजर आता है, वह भी जला हुआ,
सुलगता हुआ। जहां तक नजर जाती है,
न तो कोई घर बचा है, न ही एक पेड़, न ही
हरियाली।

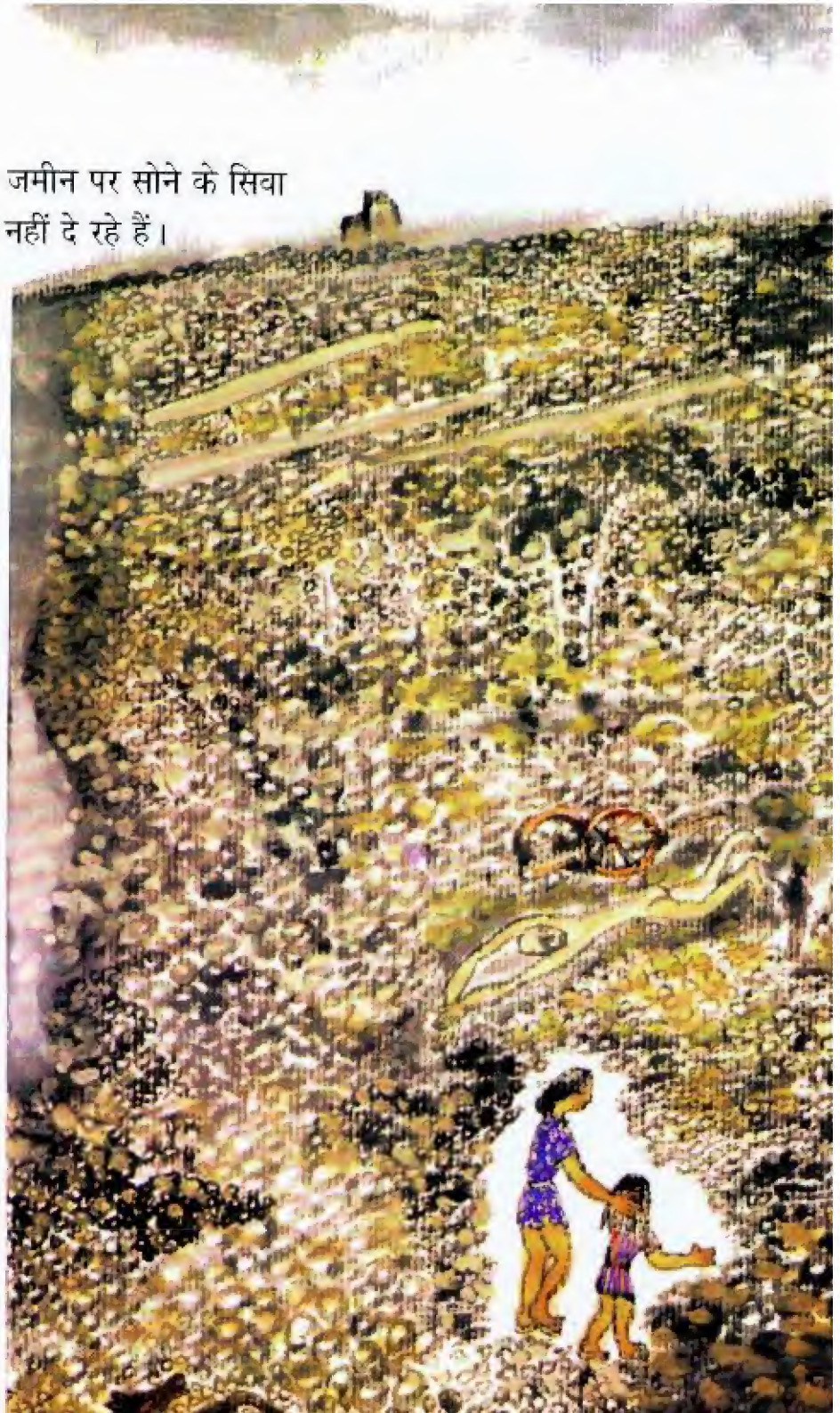

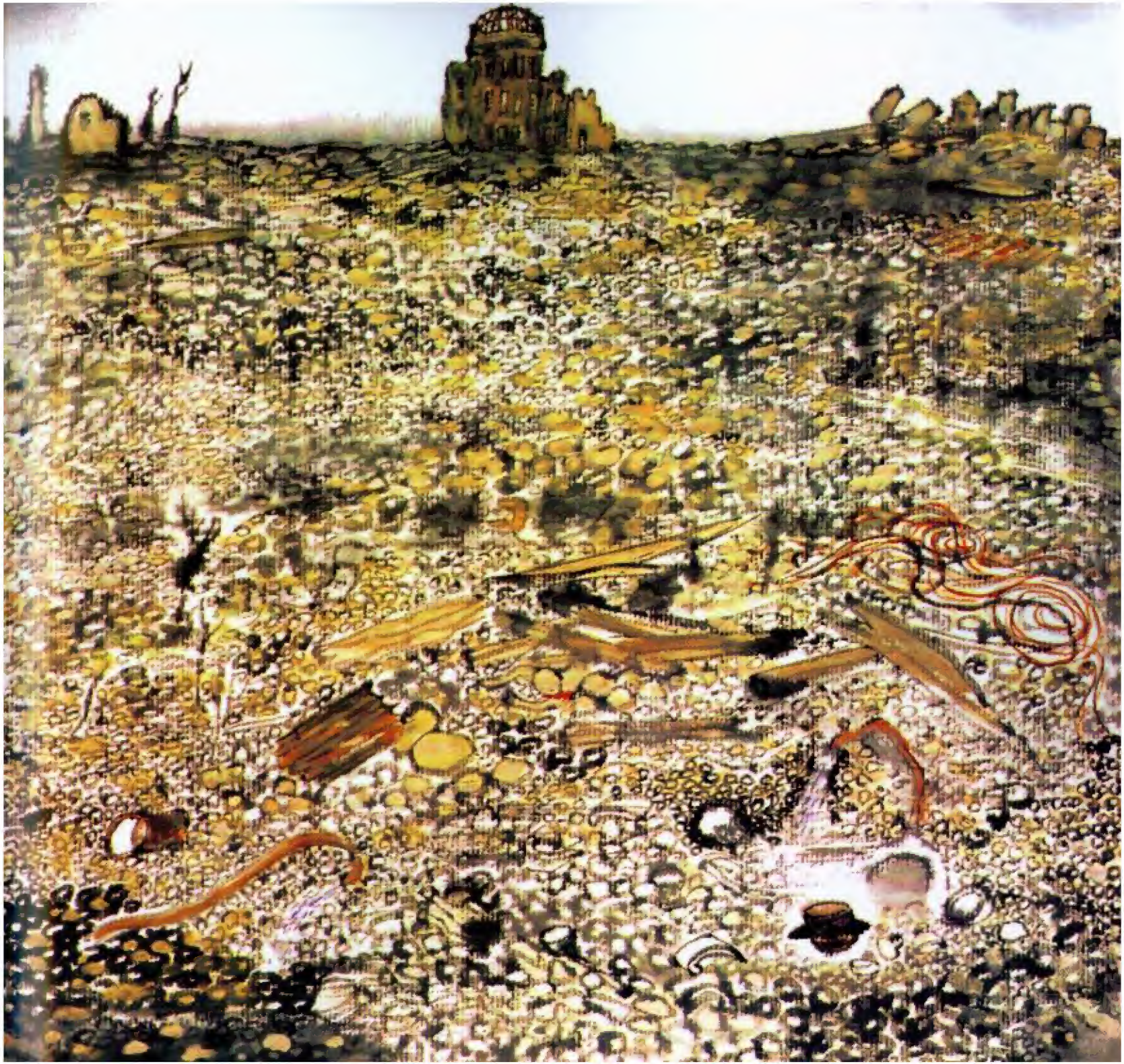

परमाणु बम तो सिर्फ एक ही गिराया था!
लेकिन अनगिनत लोगों की जान गई।
उसके बाद भी एक-एक कर
न जाने कितने लोगों की मौत होती रही।

सिर्फ जापानी ही नहीं थे जिन्होंने
अपनी जान गंवाई इस परमाणु बम की वजह से।
असंख्य कोरियाई भी थे
जिन्हें जबरन जापान लाया गया था
मेहनत-मजदूरी करने के लिए।
उनकी भी लाशें चारों तरफ बिछी हुई थीं।
ऐसे ही छोड़ दिया गया था उन लाशों को और
सैकड़ों कौवे आ कर उन पर चोंच मार रहे थे।
छह अगस्त के इस हादसे के बाद पुनः नौ अगस्त
को नागासाकी शहर पर दूसरा परमाणु बम
गिराया गया। काफी लोगों की जान गई,
जापानी भी, कोरियाई भी।
साथ ही अमेरिका के भी कुछ लोग मारे गए।
वही अमेरिका जिसने हिरोशिमा और नागासाकी
पर परमाणु बम गिराए। चीन के लोग भी, रूस
के लोग भी, इंडोनेशिया के लोग भी
इस हादसे का शिकार हुए।

कई साल बीत गए इस बात को, पर मीचन अभी भी सात साल की दिखती है। जरा भी बड़ी नहीं हुई है। 'उस चकाचौंध रोशनी वाले परमाणु बम की वजह से ही ऐसा हो गया।' यह खयाल आते ही मां की आंखें भर आती हैं। कभी-कभी मीचन के सिर में खुजली होती है वह सिर पर हाथ लगाती है। जब मां उसके बालों को हटा कर ध्यान से उसके अंदर झांकती हैं, बालों के बीच में कुछ चमकीली चीज दिखाई देती है। हेयर पिन से पकड़कर खींचती है तो वह टुकड़ा बाहर आ जाता है। चकाचौंध के समय ही कहीं से उड़ कर सिर में आ गया था यह कांच का टुकड़ा। पापा के बदन में तो सात-सात गड्ढे जैसे गहरे घाव थे। धीरे-धीरे सभी भर गए और वे पूरी तरह अच्छे हो गए। लेकिन जैसे ही अगली बारिश हुई शरद ऋतु के अवसर पर कुछ दिन तक। सारे के सारे बाल झड़ गए। खून की उल्टियां काफी होने लगीं और फिर उन्होंने दम तोड़ दिया। बाद में सारे बदन पर दाने-दाने निकल आए बैगनी रंग के।

ऐसे भी कई लोग थे, जिनके बदन पर कोई घाव नहीं था। न था कहीं जलन का निशान। बहुत खुश थे वे लोग और कहते थे, "मैंने जान छुड़ा ली।" लेकिन वैसे लोग भी पापा की अवस्था में पहुंच गए और दिन बीतने के साथ इस संसार से विदा होते चले गए।

ऐसे भी लोग थे जो बाहर से आए थे, जले हुए हिरोशिमा शहर में अपने प्रियजनों को ढूंढ़ने, हिरोशिमा की व्यथा-कथा सुन कर। पर उनकी भी मौत हो गई बिना कोई घाव आए। पैंतीस साल बीत गए उस हादसे को। लेकिन आज भी काफी लोग अस्पतालों में भर्ती हैं और वे भी एक-एक करके चिरनिद्रा में विलीन होते जा रहे हैं।

उसके बाद, हर वर्ष जब छह अगस्त का दिन आता है,
हिरोशिमा शहर की सातों नदियां
तैरते हुए 'तोरो' नामक दीपों से भर जाती हैं।
उस चकाचौंध में शहीद हुए प्रियजनों के नाम
उन दीपों पर अंकित किए जाते हैं।
भैया, मां, पापा, चियोचन, तोमिचन...।
पल भर में ही पूरी नदी दीपों की जगमगाहट से आच्छादित हो जाती है। हिरोशिमा की सातों नदियां मानो आग की धारा के रूप में प्रवाहित हो रही हों। धीरे-धीरे मंद गति से समंदर की ओर प्रवाहित हो रही है। उस चकाचौंध वाले दिन जैसे लोगों के मृत शरीर प्रवाहित हो रहे थे
समंदर की ओर, वैसे ही आज प्रवाहित हो रही है
दीप की ज्वाला। मीचन ने भी दीप पर लिखा
सिर्फ 'पापा'। एक और दीप पर उसने लिखा
'अबाबील प्यारी-सी' और उसे जल में प्रवाहित कर दिया।

मां के बाल अब सफेद हो चुके हैं।
अक्सर कह उठती हैं
मीचन के बाल सहलाते हुए
जो अभी भी सात साल की ही लगती है।
"वैसा चकाचौंध वाला परमाणु बम
कभी नहीं गिरता, अगर इंसान उसे नहीं गिराता।"

はるおくん
あかちゃん

अपनी बात

तोशि मारुकि

आज से सत्ताईस साल पहले की बात है। जापान के उत्तरी उपद्वीप 'होक्काइदो' के एक छोटे शहर में प्रदर्शनी 'परमाणु बम का चित्र' का आयोजन हुआ। मैंने प्रवेश-द्वार पर दर्शकों का स्वागत करते हुए यह बताया कि हमें परमाणु बम और युद्ध का विरोध करना चाहिए। साथ ही मैंने दर्शकों से हमारे हस्ताक्षर अभियान में भाग लेने के लिए अनुरोध किया।

एक दिन, इस प्रदर्शनी को देखने के लिए एक औरत आई। वह किसी गुस्से में थी। वह तेजी से हॉल की ओर बढ़ी और अंदर जाकर चित्रों को निहारने लगी।

थोड़ी देर बाद वह हॉल से बाहर निकल आई और बताने लगी

"इस प्रदर्शनी को देखने से पहले मैं यह सोच रही थी कि इस प्रदर्शनी में ऐसी तस्वीरें होंगी जो दूसरों का दुख खींचकर तमाशा बना रही होंगी। इसलिए मेरा इस प्रदर्शनी को देखने का मन ही नहीं था। अतः मैं प्रदर्शनी-हॉल के अंदर नहीं गई थी और प्रवेश-द्वार के सामने से आगे गुजरने लगी थी। तब सहसा मेरा मन कह उठा, 'रुको'। तो मैं हॉल के सामने तक वापस आ गई। परंतु फिर से मेरा मन कहने लगा, 'मैं कभी नहीं देखूंगी।' तो मैं फिर आगे निकल गई। इसी तरह से मुझे कई बार आना-जाना करना पड़ा, पर अंततः मैं हॉल के अंदर चली गई।

"जिस दिन हिरोशिमा में परमाणु बम गिरा, तब मैं उसी शहर में रहती थी। उस हादसे के बाद मैं यहां होक्काइदो में चली आई। यहां आने के बाद मुझे लगा कि होक्काइदो के लोगों का हृदय बहुत कठोर है। जब-जब मैं परमाणु बम के समय की बात करती थी, तो वे लोग मेरी पीठ पीछे ऐसी निंदा करते थे कि मैं सहानुभूति जताने के लिए बढ़ा-चढ़ा कर बात करती हूं। इसलिए मैंने संकल्प किया कि अब परमाणु बम के बारे में बिल्कुल नहीं बताऊंगी, किसी के पूछने पर भी नहीं।"

इतना कहने के बाद उस औरत ने थोड़ी देर के लिए अपनी आंखें बंद कीं। फिर वह पास पड़ा माइक पकड़कर लोगों को जोर से बताने लगी, "अब मैं आप लोगों को कुछ बताना चाहती हूं। आज मुझे लगा कि

आप लोग मेरी बात को जरूर समझेंगे और विश्वास करेंगे, क्योंकि आप लोगों ने इस प्रदर्शनी को देखा है। आप लोग सुनिए और मेरी बात पर विश्वास कीजिए।''

काफी लोग प्रदर्शनी देखने आए हुए थे, सब लोग हैरान होकर उस औरत की ओर देखने लगे। मैं भी हैरान हो गई, पर मैंने उसको बुलाते हुए मंच पर पहुंचाया।

वह रोते-रोते, सिसकते-सिसकते बताने लगी कि हिरोशिमा में परमाणु बम गिरा, तब कैसे उसको अपने बच्चे को बचाकर, साथ ही अपने घायल आदमी को अपनी पीठ पर उठाते हुए इधर-उधर भागना पड़ा। सब लोग बहुत ध्यान से उस औरत की बात सुनते रहे। कुछ लोग तो रोने भी लगे।

अंततः उसने कहा, ''आप लोगों ने मेरी बात सुनने की कृपा की, बहुत-बहुत धन्यवाद। माफ कीजिए कि मैंने होक्काइदो के लोगों को बुरा कहा।'' वह सबके सामने नतमस्तक हो गई।

उस दिन के बाद मेरा हृदय बहुत दिनों तक पीड़ित रहा। उस दिन उस औरत ने बताया कि जब परमाणु बम गिरा, तब से उसकी बेटी मीचन बिल्कुल बड़ी नहीं हो पाई, सदा सात साल की ही दिखती रही। पता नहीं आज उसकी मीचन किस हाल में होगी? और वह औरत भी कहां और कैसे रहती होगी? असल में इस सचित्र पुस्तक की सृष्टि उस औरत की कहानी के आधार पर ही हुई। साथ ही, इस पुस्तक में ऐसे अनुभव भी शामिल हैं जिन्हें मैंने परमाणु बम के हादसे में खुद देखा और सुना।

आज मैं लगभग सत्तर वर्ष की हो गई हूं। मेरा कोई बच्चा नहीं है, इसलिए पोता भी नहीं। फिर भी मैंने पोतों के लिए एक वसीयत के रूप में इस पुस्तक को लिखा है।

इस पुस्तक को तैयार करने में बहुत लंबा समय लगा। मैंने तस्वीर को खींचा, फिर मिटाया। दुबारा से खींचा, फिर मिटाया। ऐसा बहुत बार हुआ। संपादक चीबा भाई और असंख्य मित्रों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूं। इन लोगों से मुझे अमूल्य प्रोत्साहन और सहायता मिली, खासकर जब मैं अभिव्यक्ति को लेकर बहुत उलझी हुई थी। साथ ही, हिरोशिमा के निवासी श्री जिस्तुओ ताबुचि द्वारा भेंट की गई महत्त्वपूर्ण सामग्री के लिए और श्री हिरोशि कावादे, हिरोशिमा रेलवे कंपनी के प्रचार अधिकारी के प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूं।

27 फरवरी, सन् 1980

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

₹ 65.00
ISBN 81-237-6327-1
9 788123 763277
12131191